प्रातः क्लास 6-1-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे रूहानी बाप के सामने बैठे हैं। बाप के सामने भी बैठे हैं, शिक्षक के सामने भी बैठे हैं, और यह भी जानते हैं यह बाबा गुरु के रूप में आये हैं हम बच्चों को ले जाने लिये। बाप भी कहते हैं हे रूहानी बच्चोंमें आया हूं यहां से तुमको ले जाने। यहपुरानी दुनिया बन गई है। और यह भी जानते हो कियह छी छी दुनिया हैं। तुम बच्चे छी छी बन गये हो। अपने को आर्पेही कहते हो पतित-पावन बाबा आकर हम पतितों को इस दुःखधाम सेसुखधाम ले जाओ। अभी तुम यहां बैठे रहते हो तो यह दिल में आना चाहिए बाप भी कहते हैं मैं तुम्हारे बुलावे पर, निमंत्रण पर आया हूं। बाप याद दिलाते हैं बरोबर तुम बुलाते हो ना। आओ। अभी तुमको स्मृति आई हैं। हमने बुलाया है। अभी बाबा आये हुये हैं ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिसल। बड़ लोगपलेन बनाते हैंना। यह भी शिव बाबा का पलेन है। इस समय सभी के अपने2 पलेन्स हैं ना। वर्ष का पलेन बनाते हैं। उसमें यह करेंगे यह करेंगे। बातें देखो कैसी आकरमिलती हैं। आगे यह पलेन आदि नहीं बनाते थे। अभी पलेन बनाते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारे बाबा का भी पलेन है। ड्रामा के पलेन अनुसार5000वर्ष पहले मिसल मैंने यहपलेन बनाया है। तुम मीठे2 बच्चे जो यहां बहुत दुःखी हो गये हो विद्यालय में पड़े हो। अभी मैं आया हूं तुमको शिवालय में ले जाने। वह शान्तिधाम है निराकारी शिवालय। और सुखधाम है साकारी शिवालय। तो इस समय बाप तुम बच्चों को रिफ्रेश कर रहे हैं। बाप के सम्मुख बैठे हो ना। बुद्धि में निश्चय तो है बाबा आया हुआ है। बाबा बहुत अक्षर बहुत ही मीठा है। यह भीजानते हो हम आत्मायें उस बाबा के बच्चे हैं। फिर पार्ट बजाने लिये इस बाबा के बने हैं। कितना समय तुमको लौकिक बाबायें मिलते हैं? (सतयुग से लेकर) हां सतयुग से लेकरसुख और दुःख का पार्ट बजाया है। तुम अभी जानते हो हमारा दुःख का पार्ट पूरा होता है। सुख का पार्ट भी 21 जन्म बजाया है। फिर आधा कल्प दुःख का पार्ट बजाना। बाबाने तुमको स्मृति दिलाई है। बाप पूछते हैं बरोबर ऐसे हैना। अभी फिर तुमको सुख का पार्ट बजाना है। आधा कल्प इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा भी भरतू होती है। फिर खाली हो जाती हैं। फिर बाप भरतू करते हैं। तुम्हारे गले में विजय माला पड़ी है। यह विजय माला है ना। गले में ज्ञान की माला है। बरोबर हम चक्र फरते रहते हैं। सतयुग त्रेतादेवापर कलियुग। फिर आते हैं इस स्वीटसंगम पर। इनको स्वीट कहेंगे। शान्तिधाम कोई स्वीट नहीं। सभी से स्वीट है पुरुषोत्तम संगम कल्याणीकारी संगम युग। ड्रामा मेंतुम्हारा यह अच्छे ते अच्छा पार्ट है। तुम कितने लक्की हो। बेहद के बाप के तुम बनते हो। वह आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। कितनी ऊंच =कितनी सहज पढ़ाई हैं। कितना तुम धनवान बनते हो। इसमें कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती हैं। डाक्टर ईजीनियर आदि सीखने कितने मेहनत करते हैं। हमको तो वरसा मिलता हैं। बाप की कमाईपर बच्चे बैठते हैं ना। तुम यह पढ़कर 21 जन्मों की सच्ची कमाई करते हो। वहां तुमको कोई घाटा नहीं पड़ता हैं। तो बाप को याद करना पड़े। इनको ही अजपा जाप कहा जाता हैं। तुम जानते हो बाबा आया हुआहै। बाप भी कहते हैं मैं आया हुआ हूं। दोनो की ताली बजु बजेगी ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। =5विकारों रूपी रावण ने तुमको पापात्मा बनाया है। फिर पुण्यात्मा भी बनना है। यह भी बुधि में आना चाहिए। हम बाप की याद से पवित्र बनकरफिर घर जावेंगे बाप के साथ। फिर इस पढ़ाई से हमको प्राईट मिलती है। देवी देवताओं के धर्म लिये ही कहा जाता है रीलिजन इज प्राईट। बाप तो है सर्वशक्तिवान। तो बाबा से हम हमें विश्व में शान्ति स्थापन करने कीताकत मिलती हैं। वह बादशाही हमसे कोई छीन न सके। इतनी ताकत मिलतीहैं। राजाओं के हाथ में देखो कितनी ताकत आ जातीहैं। कितना उनसे डरते हैं। एक राजा की कितनी प्रजा। कितना लश्कर आदि होते हैं। परन्तु वह है अल्प काल की ताकत। अभी तुम जानते हो हमको सर्वशक्तिवान बाप से ताकत मिलती हैं। विश्व पर राज्य करने की। लव तो नहीं रहता है ना। देवताएं प्रेक्टीकल में ही है तो भी कितनालव रहता हैं। जब सम्मुख होंगे तो प्रजा का कितना लव होगा। याद की यात्रा से यह सभी —

शक्ति तुम सभी ताकत ले रहे हो। यह बातें भूलो नहीं। याद करते2 तुम बहुत ताकत वाले बन जाते हो। सर्व-शक्तिवान और कोई को नहीं कहा जाता। सभी को शक्ति मिलती हैं। इस समय कोई में भी शक्ति नहीं है। सभी हैं तमोप्रधान। फिर सभी आत्माओं को एक से ही शक्ति मिलती हैं। फिर अपनी राजधानी में आकर अपना2 पार्ट बजाते हैं। अपना हिसाब किताब चुकुत करफिर ऐसे ही नम्बरवार शक्तिवान बनते हैं। पहले नम्बर की है इन देवताओं में शक्ति। यह ल०ना० बराबर सारे विश्व के मालिक थे ना। तुम्हारी बुधि में सारी सृष्टि के चक्र का ज्ञान है। जैसे तुम्हारी आत्मा में यह नालेज है वैसे बाबा की आत्मा में भी सारी नालेज है। अभी तुमको ज्ञान दे रहे हैं। ड्रामा में पार्ट भरा हुआ है। जो रिपीट होता रहता हैं। फिर वह पार्ट 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो तुम सतयुग में राज्य करते हो तो बाप रिटायर में रहते हैं। फिर कब स्टेज पर आते हैं जब तुम दुःखी होते हो। तुम जानते हो उनके अन्दर सारा रिकार्ड भरा हुआ है। कितनी छोटी आत्मा है। उनमें कितनी समझ रहती हैं। बाप आकर कितनी समझ देते हैं। फिर वहां सतयुग में तुम यह सभी भूल जाते हो। सतयुग में तुमको यह नालेज होती ही नहीं। वहां तुम सुख भोगते रहते हो। यह भी अभी तुम समझते हो सतयुग में हम सो देवता सुख भोगते हैं। अभी हम सो ब्राह्मण हैं। फिर हम सो देवता बन रहे हैं। यह ज्ञान भी बुधि में अच्छी रीत धारण करनी हैं। किसको समझाने में खुशी होती है ना। तुम जैसे कि प्राण दान देते हो। कहते हैं काल सभी को आकर ले जाते हैं' काल आदि को ई है नहीं। यह तो बना बनाया ड्रामा हैं। आत्मा कहती हैं मैं एक शरीर छोड़ चला जाता हूं। फिर दूसरा लेता हूं। मुझे कोई काल नहीं खाता हैं। आत्मा को फीलिंग आती हैं आत्मा जब गर्भ में रहती हैं तो सा० कर दुःख भोगती हैं। अन्दर सजा भोगती हैं। इसलिये इनको कहा जाता है गर्भजेल। यह ड्रामा कितना वन्डर फुल बना हुआ हैं। गर्भजेल में सजा खाते अपना सा० करते रहते हैं। सजा क्यों मिली सा० तो करावेंगे ना। यह यह बेकायदे काम किया है। इनको दुःख दिया है। वहां सभी सा० होते हैं। फिर भी बाहर आकर पापात्मा बन जाते हैं। सभी पाप भस्म कैसे होंगे। सो तो बच्चों को समझाया है। इस याद की यात्रा से, और स्वदर्शनचक्र फिराने से तुम्हारे पाप कटेंगे। बाप कहते भी हैं मीठे2 स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों। तुम 84 का स्वदर्शनचक्र फिरावेंगे तो तुम्हारे जन्मजन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। चक्र को भी याद करना है। किसने यह ज्ञान दिया। उनको भी याद करना पड़े। बाबा हमको स्वदर्शनचक्र धारी बना रहे हैं। बनाते तो हैं परन्तु फिर रोज2 नये2 आते हैं तो उन्हों को रिफ्रेश करना होता हैं। तुमको सारा ज्ञान मिलता हैं। अभी तुम जानते हो हम यहां आये हैं पार्ट बजाने। 84 का चक्र लगाया अभी फिर वापस जाना है। ऐसे चक्र फिराते रहते हो? बाप जानते हैं बहुत बच्चे भूल जाते हैं। चक्र फिराने में कोई तकलीफ नहीं हैं। फर्क तो बहुत ही मिलती हैं। पिछाड़ी में तुम्हारी स्वदर्शनचक्रधारी की अवस्था रहेगी। तुमको ऐसा बनना है। सन्यासी लोग तो यह शिक्षा दे न सकें। स्वदर्शनचक्र को गुरु लोग ही जानते नहीं हैं। वह तो सिर्फ कहेंगे चलो गंगा जी पर। कितने स्नान करते हैं। बहुत स्नान करने से गुरुओं को आमदनी होती है। घड़ी2 यात्रा पर जाते हैं। अभी उस यात्रा और इस यात्रा में फर्क देखो कितना हैं। यह यात्रा वह सभी यात्राएं छुड़ा देती हैं। यह यात्रा कितनी सहज हैं। चक्र भी फिराओ। गीता भी है ना चारों तरफ लगाये फेरे ====फिर भी हरदम दूर रहे। बेहद के बाप से दूर रहे। यह तुमको महसूसता आती हैं। वह लोग इस अर्थ को ही नहीं जानते। अभी तुम जानते हो। बहुत फेरे लगाते रहे। अभी इन फेरों से तुम छूट गये हो। फेरे लगाते कोई नजदीक नहीं आये हैं। और ही दूर होते गये। अभी तुम जानते हो बाप को भी ड्रामा के प्लेन अनुसार आना पड़ता है। सभी को साथ ले जाओ। बाबा को आना ही पड़े। बाप कहते हैं मेरी मत पर तुमको चलना ही हैं। पवित्र बनना पड़ेगा। इस दुनिया को देखते हुये देखना नहीं हैं। जब तक नया मकान बनकर तैयार हो जाये। तब तक पुराने में ही रहना पड़ता हैं। बाप संगम पर ही आते हैं वरसा देने। बेहद के बाप का है बेहद का वरसा। बच्चे जानते हैं बेहद के बाप का वरसा हमारा है। उस खुशी में रहते हैं। अपनी कमाई भी करते हैं, और बाप का वरसा भी—

मिलता है। तुमको तो वरसा ही मिलता है। वहां तुमको पता नहीं पड़ेगा स्वर्ग का वरसा हमको कैसे मिला। वहां तो तुम्हारी लाईफ बहुत ही सुखी रहती है। क्योंकि तुम बाप को याद कर माईट लेते हो। पाप कटने वाला पतित-पावन एक ही बेहद का बाप है। बाप को याद करने, स्वदर्शनचक्र फिराने से ही तुम्हारे पाप कटने हैं। यह अच्छी रीत नोट करो। यही समझाना बस है। आगे चल तुमको तिक2 नहीं करनी पड़ेगी। एक ईशारा ही बस है। वे हद के बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह 84 का चक्र समझना है। गाया भी जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी रिपीट होती है। अभी है संगम। तुम जानते हो सतयुग त्रेता, द्वापर कलियुग पास्ट हो गई हैं। तुमको अभी स्मृति आई है। और कोई मनुष्य की बुधि में नहीं रहता। तुम्हारी बुधि में है। हरेक युग को 1250 वर्ष देते हो। 1250 वर्ष सतयुग उनकी निशानी यह ल0ना0 हैं। सतयुग में इन्हों का राज्य था। फिर त्रेता में है राम का। डिनायस्टी चलती है ना। फिर ईब्राहीम बुध क्राईस्ट का चला है। तुम्हारी बुधि में मुख्य2 तो सभी हैं। बाकी बाकी छोटे-मोटे को तो याद नहीं करना है। कल्प कोई लाखों वर्ष का नहीं है। यह तो कल की बात है। पुरुषोत्तम संगम युग का अर्थ भी कोई नहीं जानते हैं। उत्तम ते उत्तम पुरुष और स्त्री बनते हैं। तुम नर से ना0 नारी से ल0 बनने आये हो। यह तो याद है ना। और कोई को भी बुधि में यह बात नहीं आती। यहां तुम आते हो, बुधि में है हम जाते हैं बाप दादा पास। उन से नई दुनिया स्वर्ग का वरसा लेने। बाप कहते हैं स्वदर्शनचक्रधारी बनने से तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। अभी जो तुम्हारे जीवन हीरे जैसा बनाते हैं उनको देखो। यह भी तुम समझते हो। इसमें देखने की कोई बात ही नहीं। यह तो दिव्य बुधि द्वारा जानते हो। आत्मा ही पढ़ाती है इस शरीर द्वारा। यह अभी ज्ञान मिला है। हम जो कर्म करते हैं, आत्मा ही शरीर लेकर कर्म करती हैं। बाबा को भी पढ़ाना है। उनका नाम तो सदैव शिव ही हैं। शरीर का नाम बदलते है। यह शरीर तो हमारा नही है। यह इनकी मिलकीयत है। शरीर आत्मा की मिलकीयत होती है। जैसे पार्ट बजाती हैं। यह तो बिल्कुल ही सहज समझने की बातें हैं। कृष्ण की तो अपनी आत्मा है। उनके शरीर का कृष्ण पड़ा है। आत्मायें तो सभी हैं। सभी के शरीर का नाम अलग2 होता हैं। यह फिर भी है परमआत्मा। सुप्रीम आत्मा। ऊंच ते ऊंच। मनुष्य भुंझे हुये हैं। इसलिये कृष्ण का नाम लगा दिया है। अभी तुम समझते हो भगवान तो एक ही है। क्रियटर एक। बाकी सभी है रचना। पार्ट बजाने वाले। यह भी जान गये हो कैसे आत्मायें आती हैं। पहले2 आदि सनातन देवी देवता धर्म की आत्मायें आती हैं थोड़ी। फिर पिछाड़ी में लायक बनते हैं पहले आने लिये। यह सृष्टि चक्र की जैसे माला है जो फिरती रहती हैं। माला को तुम फिराते हो तो सभी दानों का चक्र फिरता है ना। सतयुग में भक्ति का जरा भी अंश नहीं होता। बाप ने समझाया है भक्ति का अर्थ ही है दुर्गति मार्ग। सीढ़ी उतरना। ज्ञान मार्ग है सीढ़ी चढ़ना। मूल बात बाप एक ही समझाते हैं हे आत्मायें मामेकं याद करो। तुमको घर जरूर लौटना है। विनाश सामने खड़ा है। याद से ही पाप कटेंगे। और फिर सजा भी खाने से छूट जावेंगे। नहीं तो सजा भी बहुत खानी पड़ेगी।

मैं तुम बच्चों पास कितना अच्छा मेहमान हूं थोड़े दिन का। सुप्रीम बाप, परमपिता, सारे विश्व का मालिक तुम्हारे पास मेहमान है। मैं सारे विश्व को चेंज करता हूं। पूराने विश्व को नया बना देता हूं। तुम भी जानते हो बाबा कल्प2 आकरविश्व को चेंज करपुराने से नया बना देते हैं। नई से पुरानी, पूरानी से नई होती है ना तुम इस समय चक्र फिराते रहते हो। सारा चक्र बुधि में है। बाप की बुधि में ज्ञान है। वर्णन करते हो। तुम्हारी बुधि में भी है चक्र कैसे फिरता है। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। उनकी श्रीमत पर हम पावन बनते हैं। जितना अच्छा पावन बनेंगे। याद से ही पावनबनते जावेंगे। फिर ऊंच पद पावेंगे। पुरुषार्थ भी करना जरूरी है। पुरुषार्थ कराने लिये कितने चित्र आदि बनाते हैं। जो आते हैं उनको तुम 84 का चक्र समझाते हो। बाप को याद करने से तुम पतित- से पावन बन जावेंगे। अभी तमोप्रधान बैठने हो। पहले सतोप्रधान थे तो कितने थोड़े थे। दूसरे2 धर्म आये हैं। तुम्हारे सब हो जाते हैं। अच्छा बच्चे को गुडमोर्निंग और नमस्ते।

थे। अभी तो ढेर हो गये हैं। और फिर दूसरे2 धर्म भी आते गये हैं। खेल सारा तुम्हारे पर ही है। 84 का चक्र भी पहले2 तुम खाते हो। तुम से पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा करते हो। बोलो हम भारत को शिव (स्वर्ग) बनाते हैं। भारत 100% सालवेन्ट था। हम यह भारत की सेवा करते हैं। हम यह देवता बन रहे हैं। भारत सुधार रहे हैं। कैरेक्टर्स है ही पवित्रता पर। इन्हों के आगे गाते भी हैं आप सर्वगुण सम्पन्न ... मैं में कोई गुण नाहीं। यह तो जिनके आगे जाते उनको कहते रहते हैं अक्सर के कर केल0ना0 के मंदिर में जाये महिमा गाते हैं। यह हैं ही सतयुग के मालिक। इनको ही कहते हैं आपेही तरस परोई ... यह नहीं जानते कि यह ल0ना0 होलोटेपन फ्रम मैराथे-कृष्ण थे। रामचन्द्र के आगे नहीं कहेंगे। बाप को ही कहते हैं रहम करो। आशीर्वाद करो। अभी अपने आप तुमको आशीर्वाद मिल रही हैं। बाप ऊपर से आकर तुमको पढ़ाते हैं। वह बाप भी है शिक्षक भी है गुरु भी हैं। यह गुण तो कोई भी मनुष्य में होते ही नहीं। बाप भी है, वही टीचर बन पढ़ाते हैं। फिर साथ भी ले जाते हैं। उनको कहा जाता है शिव की बारात। बुधि से समझते हो सतयुग में तो बहुत हीथोड़े मनुष्य होते हैं। यहां तो बहुत ही जीवात्मायें अथवा मनुष्य हैं। सतयुग में बहुत ही कम होंगे। बाकी आत्मायें कहां गईं। बाप बैठ बतलाते हैं। जीव अर्थात शरीर खत्म हो जाते हैं। बाकी आत्मायें सभी वापिस चली जाती हैं। तुम्हारी आत्मायें सुखधाम में जाती हैं बाकी सभी शान्तिधाम में चले जाते हैं। तुम जब सुखधाम में जाते हो तो जड़जड़ीभूत हो जाती हैं। अभी कितनी हाहाकार है। अन्त में भी हाहाकार होगा। नैचरल कैलेमिटिज भी होंगी। यह सारी दुनिया नहीं रहेगी। सारी दुनिया पर इन ल0ना0 का राज्य होगा। सभी पवित्र बनजावेंगे। पतित-पावन बाप आकर सारे विश्व को पावन बना देते हैं। आत्मा ही मेहनत करती हैं। बाप भी इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को मेहनत कराते हैं। बाप कहते हैं मैं अपना स्वीट होम छोड़ कर तुम्हारे बुलावे पर मेहमान बनकर आता हूं। कितनी इनकी इज्जत रखनी चाहिए। कितना बड़ा मेहमान है। परन्तु आधा कल्प से रावण के डंसे हुये हैं तो समझते ही नहीं हैं। ऐसे मेहमान से कैसे रिगार्ड से बात-चीत करनी चाहिए। वह स्मृति जब आवे ना। 50-60 वर्ष बाप रहते हैं परन्तु स्मृति नहीं आती। बाहर वाले तो बहुत ही मिक्स व प्रेम से आते हैं। बहुत ही प्रेम के आंसू बहते रहते हैं। बाबा आप तो हमारे दुःख दूर करने वाले हो। हमने बहुत ही दुःख देखे हैं। बहुत ही प्रेम से आते हैं मिलने लिये। वह प्रेम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हरेक का होता है। कोई में तो पाई का भी नहीं है। एकदम नील। आटे में नून जाकर रहता है। राजा और रंक कहा जाता है ना। वहां है सुख के राव और रंक। वह फिर भी नई दुनिया है। ऊंच ते ऊंच राजा रानी और प्रजा तो होते हैं ना। अभी तो है पंचायती राज्य। चुनकर फिर उन्हों को बगदादी देते हैं। आजकल तो पत्थर मारने में भी देरी नहीं करते हैं। वहां कोई ऐसे गंदे चलन का नाम-निशान नहीं रहता है। तो तुम बच्चों को यही स्मृति रखनी चाहिए। बुधि में ज्ञान है, सतयुग त्रेता, त्रेता ... यह चक्र फिरता रहता है। अभी फिर हम वापिस जाते हैं। बाप आये हैं वापिस ले जाने। बाबा को याद करने से कितना सुख मिल जाता है। ऐसे बाप को याद तो करेंगे ना। और कोई मेहनत नहीं देते हैं। बाप को याद करना है। एमआबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह प्रिन्स बनना है। कृष्ण पुरी का प्रिन्सेज की पुरी रेकनेशन है। लेन देन का हिसाब किताब भी उन से है। यह सभी बातें ध्यान में रखा कितना खुश होना चाहिए। सदैव तृप्त आत्मा। सतयुग में तुम तृप्त आत्मा रहते हो। यहां तो कितनी भूख है। तृप्त नहीं हैं। तुम बच्चों के अन्दर में तो खुशी का नगारा बजना चाहिए। बाबा कहते कुछ भी छोड़ने लिये नहीं कहते हैं। भल नौकरी करो, जो चाहिए सो करो। कैप्टन बनो। मारशल बनो। भल गोली चलाओ। बाबा ऐसे नहीं कहते गोलीन चलाओ। यह हिंसा है। नहीं। अगर हम यह नहीं करेंगे तो मुसलमान लोग भारत को ही खलास कर देंगे। गीता में है युध के मैदान में जो मरेगा वह स्वर्ग जावेगा। परन्तु युध का मैदान कौन सा? इस संगम पर ही 5 विकारों से युध की बात है। बाकी बाप कहते हैं तुम शिव बाबा को याद करो। याद करते गोली छोड़ो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यारगुडमार्निंगऔर नमस्ते।